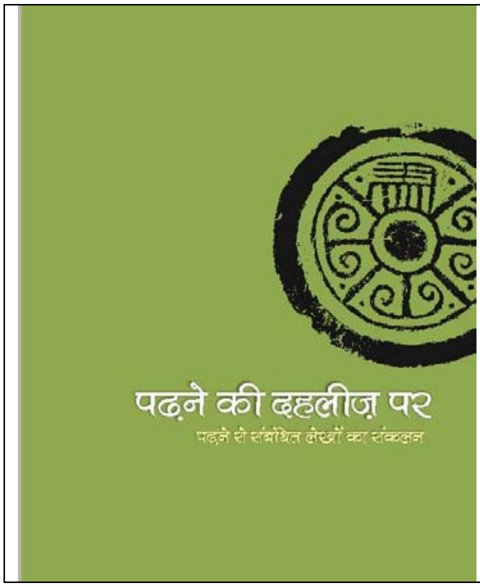

पढ़ने की दहलीज़ पर

संपादक - लता पाण्डे

प्रकाशक	एन.सी.ई.आर.टी.
प्रकाशन वर्ष	जुलाई 2008
शब्द चिह्न	रीडिंग डेवलेपमेंट सैल
मूल्य	रु. 35 /-
ISBN	978-81-7450-837-9
संस्करण	प्रथम
पृष्ठ संख्या	64
वर्गीकरण	पढ़ने से संबंधित लेखों का संकलन
भाषाओं में उपलब्ध	हिन्दी

पढ़ने की दहलीज़ पर

'पढ़ना' सीखने का शुरुआती दौर बच्चों और प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों दोनों के लिए कितना महत्त्वपूर्ण है, इस ओर प्रायः ध्यान नहीं दिया जाता। परिणामतः समझ कर पढ़ने के कौशल का विकास कक्षा तीन-चार के बच्चों में भी नहीं हो पाता। इसका एक बहुत बड़ा कारण जहाँ इस ओर नीति निर्धारकों और शिक्षाविदों का उदासीन रवैया हो सकता है, दूसरी ओर 'पढ़ने की समझ' को लेकर शिक्षकों की अपनी एक पुख्ता समझ का न बन पाना भी है। कारण और कारण के धारक चाहे कोई भी हों उसका असर बच्चे पर ही पड़ता है। पढ़ना सीखने-सिखाने की प्रगतिशील विधियों की ओर शिक्षकों और शिक्षाविदों को ध्यान आकर्षित करने और बच्चों को एक स्थायी पाठक बनाने के उद्देश्य से मानव संसाधन विकास मंत्रालय, सर्वशिक्षा अभियान के सहयोग से एन.सी.ई.आर.टी. में 2007 में रीडिंग डेवलपमेंट सैल की स्थापना की गई। रीडिंग डेवलपमेंट सैल की मुख्य गतिविधियों में से एक है 'पढ़ने' से संबंधित शोधपरक लेखों पर चर्चा और उनका संकलन। प्रस्तुत संकलन के लेखों पर विचार विमर्श हो, कक्षा एक और दो के बच्चों को ध्यान में रखकर पढ़ने को लेकर मनन चिंतन हो, पढ़ने की मौजूदा स्थिति में सुधार लाने का एक माहौल बने तो इस संकलन की सार्थकता होगी। प्रारंभिक कक्षाओं में भाषा शिक्षण का तात्पर्य पाठ्यपुस्तक के पाठों के वाचन और भाषा पाठ्यक्रम पूरा करने से कही ज्यादा व्यापक है, इन लेखों को इस संदर्भ में समझा जाए। पढ़ने के अनंत अवसर देने के लिए केवल पाठ्यपुस्तक नहीं तो और क्या हो? कक्षा में पढ़ने के अवसर देने का दायित्व केवल कक्षा एक और दो के शिक्षकों का ही नहीं हम सबका है। हम सब कहीं न कहीं भाषा, बाल साहित्य, प्राथमिक विद्यालय के बच्चों और कक्षागत स्थितियों से जुड़े हैं। इस दायित्व को निभाने के लिए पढ़ने को लेकर अपनी 'सोच एवं समझ' को आंदोलित करने और कुछ प्रभावशाली सार्थक कदम उठाने में सहयोगी होगा यह संकलन 'पढ़ने की दहलीज़ पर'। हम ये न भूलें कि कक्षा एक और दो के बच्चे ही नहीं, हम सभी 'पढ़ने की समझ' को लेकर अभी पढ़ने की दहलीज़ पर ही हैं।

क्या कहते हैं लेख

1. सही मायनों में आखिर 'पढ़ना' है क्या?

सही मायनों में 'पढ़ना' है क्या? लेख पढ़ने की समझ को विकसित करता है।

2. शुरुआती पढ़ाई का एक वैकल्पिक रास्ता

शुरुआती पढ़ाई का एक वैकल्पिक रास्ता लेख प्राथमिक स्कूलों में शिक्षण के लिए अपनाए जा रहे तौर-तरीकों की मौजूदा स्थिति और उसमें अंतर्निहित शुरुआती पढ़ाई सीखने की अवधारणाओं को परखने का प्रयास है। इसी लेख में साक्षरता के प्रारंभिक विकास के लिए एक वैकल्पिक तरीके - इमरजंट लिटरेसी पर भी चर्चा है।

3. बच्चों में पढ़ने के प्रति नफ़रत पैदा करना

बच्चों के लिए पढ़ना तभी आनंददायी बन सकता है जब रोचक क्रियाकलापों के माध्यम से पढ़ना सिखाया जाए। **बच्चों में पढ़ने के प्रति नफ़रत पैदा करना** लेख यह समझ विकसित करता है कि किस प्रकार बच्चों के लिए पढ़ना सुखद बनाया जा सकता है।

4. बच्चों को दें पढ़ने का समृद्ध वातावरण

हर बच्चा पढ़ना चाहता है। लेकिन दुर्भाग्यवश हमारे देश में कई बच्चे ऐसे हैं जिन्हें पढ़ने के लिए पाठ्यपुस्तकों के अलावा कुछ नहीं मिलता। बच्चों के लिए परिवेश में मौजूद सामग्री कितना अर्थ रखती है, कैसे दे सकते हैं पढ़ने का समृद्ध माहौल? यह जानकारी दे रहा है लेख **बच्चों को दें पढ़ने का समृद्ध वातावरण।**

5. क्या-क्या हो बच्चों की एक किताब में?

पढ़ने का माहौल बनाने में पुस्तकों की अहम भूमिका है। किताबें बच्चों को पढ़ने की ओर ले जाती हैं। कैसी हो बच्चों की किताबें? क्या-क्या हो बच्चों की किताबों में? बच्चों के लिए किताबें चुनते समय किन बातों को ध्यान में रखा जाए? इन सब मुद्दों पर चर्चा कर रहा है लेख **क्या-क्या हो बच्चों की एक किताब में**।

6. चित्रात्मक-पुस्तकें-बच्चों के साथ
   अनुभव और टिप्पणियाँ

चित्रों से पगी रंग-बिरंगी किताबें न केवल बच्चों को आनंदित कर उनकी भाषा समृद्ध करती हैं बल्कि इन पुस्तकों से उनका कलाबोध भी विकसित किया जा सकता है। चित्रों से सराबोर किताबों से जुड़े बच्चों के कुछ अनुभवों को पिरोए हुए है लेख **चित्रात्मक-पुस्तकें : बच्चों के साथ अनुभव एवं टिप्पणियाँ।**

7. पुस्तकें पढ़ें, आगे बढ़ें

बच्चों को अपनी पसंद की किताब खुद चुनकर पढ़ने का मौका मिले तो फिर किताबों से उनका मोह बढ़ते देर नहीं लगती। ऐसे ही किए गए प्रयास को हम सबके साथ बाँट रहा है लेख **पुस्तकें पढ़ें, आगे बढ़ें**।

8. पुस्तकों का खजाना - बच्चों का पुस्तकालय

बच्चों के लिए किताबों से रचा गया प्यार भरा संसार बसता है पुस्तकालय में। लेकिन अभी तक न जाने क्यों यह धारणा बनी हुई है कि पुस्तकालय तो सिर्फ़ बड़ी कक्षाओं के लिए ही होते हैं। बच्चों के लिए आनंददायक होते हैं पुस्तकालय। लेख **पुस्तकों का खजाना-बच्चों का पुस्तकालय** किताबों और पुस्तकालय की उपयोगिता का वर्णन करता हुआ हर विद्यालय हमें बाल पुस्तकालय का सुझाव देता है।

9. अशोक की कहानी

पढ़ने की दहलीज़ पर कदम रखते ही नन्हे-मुन्नों को अनेक समस्याओं से जूझना पड़ता है। कुछ बच्चे दहलीज़ को लाँघ पाते हैं और सफलताओं एवं संभावनाओं का विस्तृत संसार उनके सामने खुला होता हैं वहीं कुछ बच्चे ऐसे होते हैं जिन्हें प्रतिभा होते हुए भी स्वयं की लाख कोशिशों के बावजूद दहलीज़ से ही वापस लौटना पड़ता है और वे अज्ञान के अंधकार में खो जाते हैं। क्यों लौट जाते हैं ये बच्चे? क्या यह बच्चे का दोष है या शिक्षकों का या फिर उनके निरक्षर अभिभावकों का? कुछ ऐसे ही सवाल उठाए गए हैं। इस संकलन की प्रथम प्रस्तुति **अशोक की कहानी** के माध्यम से।

10. पढ़ने की दहलीज़ पर

प्यार, भरोसा और आत्मीयता ही पढ़ना सिखाने की बुनियाद है। केवल ज्ञान का कोई सिद्धांत पढ़ना नहीं सिखा सकता। पढ़ने का कौशल आत्मीयता का याचक है। **पढ़ने की दहलीज़ पर** लेख में साथी शिक्षकों को इसी बात का अहसास कराने की कोशिश की गई है।